भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विधार्थियों में पर्यावरण मूल्य एवं पर्यावरण जागरूकता का उनके व्यवहार पर प्रभाव

*प्रो. ग्रीष्मा शुक्ला
**निर्मला तापडिया

बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण आज हमारे समक्ष सबसे बडी चुनौती है। यदि समय रहते कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए तो पर्यावरण का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है। अतः आवश्यकता है। पर्यावरण मूल्यों को समझना और जागरुकता के माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन लाना

भूमिकाः–

हमारे चारों तरफ का आवरण ही पर्यावरण कहलाता है। प्राचीन काल में शुद्ध वायु, शुद्ध जल, हरियाली, थी। लेकिन जैसे–जैसे मनुष्य की आवश्यकताये बढ़ती गयी वैसे–वैसे प्राकृतिक संसाधन का दुरुपयोग होने लगा जिससे वातावरण प्रदूषित हो गया। वर्तमान में बढ़ता प्रदूषण, ओधौगिकीकरण, ओजोन की परत का क्षय हेाना, ग्रीन हाउस प्रभाव, एसिड रेन, हिमपात, बादल फटना आदि प्राकृतिक आपदाओं नें वातारण को तहस–नहस कर दिया जिससे हमें ऐसी मूल्यों की आवष्यकता हुयी जो पर्यावरण से सम्बन्धित है और पर्यावरण जागरुकता के माध्यम से व्यवहार में परिर्वतन कर सके।

समस्या कथनः– भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विधार्थियों में पर्यावरण मूल्य एवं पर्यावरण जागरुकता का उनके व्यवहार पर प्रभाव।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरणः–

1. **पर्यावरण मूल्यः–** प्रस्तुत अध्ययन में पर्यावरण मूल्य से तात्पर्य उन गुणों से है जो पर्यावरण को बचाये रखने मे सहायक हो।
2. **पर्यावरण जागरुकताः–**पर्यावरण जागरुकता से तात्पर्य विद्यार्थियों में पर्यावरण अध्ययन के सभी पक्षों के प्रति संचेतना से है।
3. **पर्यावरण व्यवहार :–** विद्यार्थी अपने आस–पास के वातावरण से जो कुछ सीखता है उसे व्यवहार के रुप में प्रदर्षित करता है।

उद्देश्यः–

1. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण मूल्य का क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर अध्ययन करना।
2. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता का क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर अध्ययन करना।
3. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण व्यवहार का क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर अध्ययन करना।
4. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण व्यवहार पर पर्यावरण मूल्य एंव पर्यावरण जागरुकता के प्रभाव का क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर अध्ययन करना।

परिकल्पनाएंः–

1. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण मूल्यों में क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
2. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता में क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
3. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण व्यवहार में क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
4. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण व्यवहार पर पर्यावरण मूल्य एवं पर्यावरण जागरुकता का क्षेत्र, लिंग, संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

अध्ययन के चरः– प्रस्तुत अध्ययन में पर्यावरण मूल्य एवं पर्यावरण जागरुकता को स्वतन्त्र चर के रुप में तथा व्यवहार को आश्रित चर के रुप में लिया गया है।

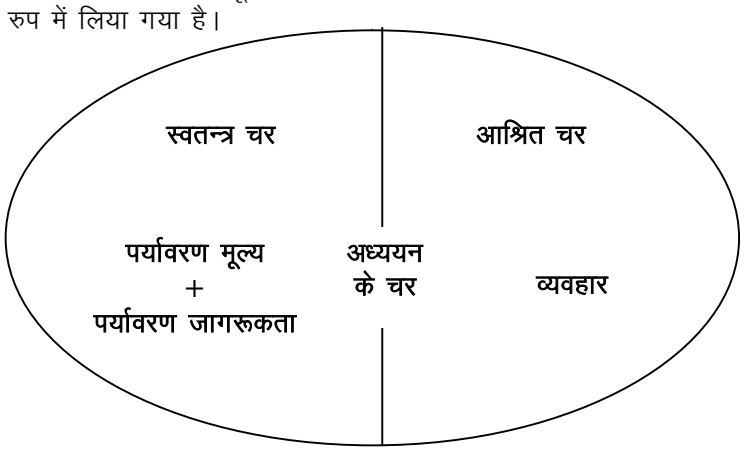

विधिः– वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया ।

जनसंख्याः– प्रस्तुत शोध कार्य में भीलवाडा की चार तहसीलों को लिया गया जिसमें बनेडा, माण्डल, शाहपुरा एवं सुवाणा के 40 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे से 20 विद्यालयों का चयन किया गया जिसमें कक्षा 11 एवं 12 के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के विद्याथियों को जनसंख्या के रुप में चयनित किया गया।

न्यादर्ष –न्यादर्ष हेतु यादृच्छिक न्यादर्षन विधि का प्रयोग किया गया।

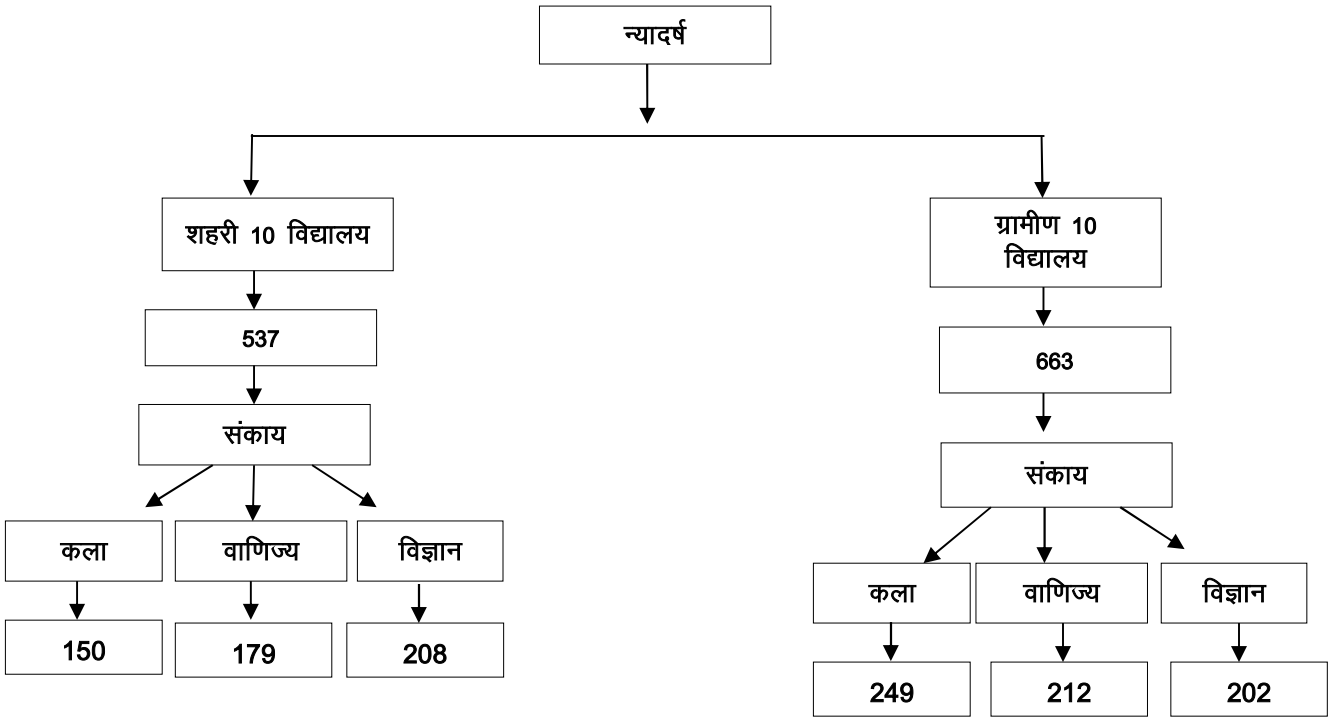

भीलवाडा का चयन न्यादर्ष के रुप में इसलिए किया गया क्योकि यहां कपडे बनाने की फेक्ट्री अधिक है ओर प्रदूषण बढ़ता जा रहा है अतः आवश्यकता है जागरुकता की।

उपकरणः– निम्न प्रमाणीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया ।

1. पर्यावरण मूल्य मापनी – शशि प्रभा दुबे
2. पर्यावरण जागरुकता मापनी– प्रवीण कुमार झा

3. पर्यावरण व्यवहार मापनी– अर्चना सिंघल एवं उर्मिला वर्मा

साख्यिकी– टी. परीक्षण एवं प्रतिगमन विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया

शोध से प्राप्त निष्कर्ष–

1. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण मूल्यों में क्षेत्र, लिंग एवं संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया ग्रमीण क्षेत्र की छात्राओं में पर्यावरण मूल्य का स्तर उच्च सकारात्मक एवं कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय की छात्राओं में पर्यावरण मूल्य के स्तर में विज्ञान की छात्राओं का पर्यावरण मूल्य का स्तर उच्चतम पाया गया।

2. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता में क्षेत्र, लिंग एवं संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया शहरी क्षेत्र के विद्याथियों में पर्यावरण जागरुकता का स्तर उच्चतम पाया गया एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों में पर्यावरण जागरुकता का स्तर अधिक पाया गया इसी तरह कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के आधार पर विज्ञान संकाय का जागरुकता का स्तर उच्च पाया गया।

3. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पर्यावरण व्यवहार में क्षेत्र, लिंग एवं संकाय के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया क्षेत्रीय आधार पर पर्यावरण व्यवहार शहरी क्षेत्र के विद्याथियों में उच्चतम पाया गया तथा लैंगिक आधार पर पर्यावरण व्यवहार का स्तर छात्रों मे औसत सकारात्मक उच्च पाया गया। इसी तरह विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में जागरुकता का स्तर उच्चतम पाया गया।

4. भीलवाडा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण व्यवहार पर्यावरण मूल्य एवं पर्यावरण जागरुकता का क्षेत्र, लिंग एवं संकाय के आधार पर सार्थक प्रभाव पाया गया है क्षेत्रीय आधार पर शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरण मूल्य एवं जागरुकता का स्तर उच्च पाया गया जो उनके पर्यावरण व्यवहार को प्रभावित करता है इसी प्रकार लैगिंक आधार पर समग्र छात्रो का पर्यावरण व्यवहार पर पर्यावरण मूल्य एवं जागरुकता का स्तर प्रभावित करता है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थी पर्यावरण व्यवहार से ज्यादा प्रभावित हुए पर्यावरण मूल्य एवं पर्यावरण जागरुकता का स्तर उच्च होने के कारण व्यवहार में परिवर्तन देखने को मिलता है।

शैक्षिक निहितार्थः– प्रस्तुत निष्कर्ष विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण मूल्य, जागरुकता एवम् व्यवहार सम्मिलित कर वास्तविक जीवन में उनके प्रयोग को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

भावी शोध हेतु सुझावः– प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवम अन्य शैक्षणिक स्तरों पर पर्यावरण मूल्यों, जागरुकता एवम् व्यवहार सम्बन्धी अध्ययन किया जा सकेगा।

***निर्देशिका**
****शोधार्थी**
स्कूल ऑफ एज्यूकेशन
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी जयपुर (राज.)

References

1. Abbas, M. Y., & Singh, R. (2014). A Survey of Environmental Awareness, Attitude and Participation Amongst University Students: A Case Study. International Journal of Science and Research, 3(5), 1755-1760. Retrieved December 17, 2020, from https://www.researchgate.net/publication/336133232_A_Survey_of_Environmental_Awareness_Attitude_and_Participation_Amongst_University_Students_A_Case_Study
2. Aggarwal, S., Rajput, B., & Shweta. (2018). Evaluation of Pro-Environmental Behaviour: A Study on effect of Self-identity on Pro-Environmental Actions. Journal Press India, 5(2), 86-102. doi:10.17492/manthan.v5i2.14323
3. Bhati, B., & Shukla, R. (2020). The Link between Environmental Awareness and Environmentally Friendly Behaviour in School Students. SCOPE Institute of Business Management, Bhopal and Department of Business & Commerce, PSS Central Institute of vocational Education, Bhopal. Indore: Madhy Pradesh, India: Dr. B.R. Ambedkar University of Social Sciences. Retrieved January 1, 2021, from https://brauss.in/bharat-3.pdf
4. Kapil, H. K. (2006). Anusandhan Vidhiyan. Agra: H.P. Bhargava Book House.
5. Sareen. (2008). Shaikshik Anusandhan Vidhiyan. Agra: Vinod Pustak Mandir.
6. Wongchantra, P., & Nuangchalerm, P. (2011). Effects of Environmental Ethics Infusion Instruction on Knowledge and Ethics of Undergraduate Students. Research Journal of Environmental Sciences, 5(1), 77-81. doi:10.3923/rjes.2011.77.81
7. Young, P. (1975). Scientific Social Survey & Research. New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.